शिक्षा क्षेत्र में नारी की स्थिति :-

→ • शिक्षा के क्षेत्र में नारी कि स्थिती : इतने विरोधों के बावजूद स्त्रियों कि शिक्षा पर लोगों का विशेष ध्यान रहता था।

इस युग में भी अनेक विदुषी स्त्रियाँ हुई, जिनमें गार्गी, मैत्रयी आदि के नाम विशेष रूप से प्रचलित थें।

→ • बाल विवाह का अभाव उत्तर वैदिक काल में देखने को मिलता है।

→ • इस काल में अंतरजातीय विवाह प्रचलित में।

→ • इस काल में भी एक पत्नि रखने की प्रथा थी।

→ • पुनर्विवाह : उत्तर वैदिक काल में विधवाओं का पुनर्विवाह हो सकता था। पुत्र प्राप्ति के लिए इस काल में विधवा कों पुनर्विवाह को अधिकार प्राप्त थें। यह निओग प्रथा में भी व्यवस्था थी।

→ • सती प्रथा का अभाव : उत्तर वैदिक काल में सती-प्रथा का अभाव था।

→ • अन्य इसी प्रकार और कुछ से ऐसे क्षेत्र है जिनमें समान रूप से दोनों कालों में समानता देखनें को मिलती है। जैसे: सती-प्रथा का अभाव, नारी और धार्मिक क्षेत्र, नारियों का सम्पती सम्बन्धी अधिकार, ये ऐसे क्षेत्र हैं जिनमें समान रूप से समानता नजर आती है।

• मौर्यकाल में स्त्रीयों की दशा : इस काल में स्त्रीयों का समाज में मान-सम्मान कम हो गया था। लेकिन वो पुरूषों के अधिन हुआ करती थीं। यद्यपी, अभी-भी उन्हें पर्याप्त स्वतंत्रता प्राप्त थी। समाज के प्रति किसी भी प्रकार का अनुचित व्यवहार कठोरतम दंड का विषय था एवं इनका कार्य केवल घर के अन्दर/अन्दर ही सिमीत था।

मौर्यकाल में वेश्यावृति का समाज में प्रचलन था। स्त्रीयां गुप्तचर और सम्राट के अंगरक्षक का कार्य भी करती थीं। उच्च जाति की स्त्रीयां भी पर्दा इस काल में पर्दा प्रथा को मानने लगी थीं।

• गुप्तकाल में स्त्रीयों की स्थिती : गुप्त काल कि बात करें तो गुप्तकाल में स्त्रीयों का बहुत आदर-सतकार होता था। उन्हें पुरूषों के समान शिक्षा दी जाती थी। शील तथा